अध्याय 6

भारत में राष्ट्रीयता

राष्ट्र या देश एक ऐसा जनसमूह है जो स्वतंत्र रूप से एक निश्चित भू–भाग में रहता हो और वह स्वतंत्रता, समानता व बन्धुत्व की सामुदायिक भावना के आधार पर संगठित हो। राष्ट्र के सदस्यों में पाई जाने वाली राष्ट्रभक्ति, आत्मीयता, देश प्रेम एवं देश के प्रति त्याग व समर्पण का भाव ही राष्ट्रवाद है। पश्चिमी देशों में राष्ट्र की अवधारणा राज्य के रूप में थी। एक जाति या नस्ल और उसका भू–भाग राष्ट्र की श्रेणी में आता था। राष्ट्र की भारतीय अवधारणा में संस्कृति का विशेष महत्व था। भारत में राष्ट्र, देश और राज्य को निम्न तालिका से समझा जा सकता है:–

अनिवार्य तत्व	राष्ट्र	देश	राज्य
1.	जन	जन	जन
2.	संस्कृति	भूमि	सम्प्रभुता

यदि जन, भूमि, सम्प्रभुता व संस्कृति चारों तत्व उपलब्ध हैं तो वह आदर्श राष्ट्र की श्रेणी में आता है।

राष्ट्रवाद का उद्‌भव एवं विकास

ब्रिटिश विद्वान सर जॉन स्ट्रेची एवं सर जॉन सीले ने भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म 19वीं शताब्दी की देन बताया है। वे भारतीय राष्ट्रवाद को ब्रिटिश उपनिवेशवाद का परिणाम मानते हैं लेकिन भारत में राष्ट्रवाद की धारणा अति प्राचीन है। वैदिक साहित्य से हमें राष्ट्रीयता की स्पष्ट जानकारी मिलती है। यजुर्वेद और अथर्ववेद में राष्ट्र की स्पष्ट व्याख्या की गई है तथा राष्ट्र के प्रति नागरिकों का क्या कर्त्तव्य होना चाहिए, उसे भी यजुर्वेद में समझाया गया है। इस तरह जब वेदों में राष्ट्र की स्पष्ट अवधारणा बताई गई है तो ब्रिटिश व पाश्चात्य प्रभाव से राष्ट्रीय भावना या राष्ट्रीयता का उदय हुआ, यह कहना उचित नहीं है। वस्तुतः भारतीयों में भारतवर्ष या भारत के प्रति सम्मान एवं भक्ति की भावना थी। यह हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक है। यही नहीं, भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा का विशेष महत्व था। प्राचीन काल में बृहत्तर भारत का उल्लेख मिलता है जिसके अन्तर्गत भारत का सांस्कृतिक प्रभाव सम्पूर्ण मध्य एशिया में व्याप्त था।

19वीं शताब्दी के मध्य से भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध लोगों में राष्ट्रीय चेतना की भावना विकसित हुई जिसकी परिणति भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में हुई। राष्ट्रीयता जनता में 'मैं' के स्थान पर हम की भावना उत्पन्न करती है।

राष्ट्रीय पुनर्जागरण के कारण

19वीं शताब्दी का भारतीय राष्ट्रीय पुनर्चेतना अंग्रेजों द्वारा किये जाने वाले भारत के आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दमनचक्र के विरूद्ध प्रतिक्रिया था। राष्ट्रीय भावना की शक्ति के बल पर भारतीयों ने अंग्रेजों को देश छोड़कर जाने के लिए मजबूर किया। अंग्रेजों ने भारत पर अधिपत्य की शुरूआत बगांल से की थी। कोलकता 1911ई. तक ब्रिटिश भारत की राजधानी रहा था। अतः उनका सर्वाधिक प्रभाव भी यहीं रहा। भारत में राष्ट्रीय पुनर्जागरण उत्पन्न होने के निम्नांकित कारण रहे है:–

1. **भारत के गौरवपूर्ण अतीत का प्रभाव**–अपार ज्ञान के कारण प्राचीन काल में भारत को विश्वगुरू कहा जाता था। प्राचीन काल में हमारे महापुरूषों एवं शासकों ने भारत को एक सूत्र में लाने का प्रयास किया। इसी गौरव की प्रेरणा से 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों के विरूद्ध राष्ट्रभावना जाग्रत हुई। अतीत के गौरवपूर्ण इतिहास व सांस्कृतिक वैभव की जानकारी पाश्चात्य विद्वान विलियम जॉन्स, प्रिन्सेस, मैक्समूलर, फर्गुसन एवं भारतीय विद्वान राजेन्द्र लाल मित्रा तथा विलियम जॉन्स ने संस्कृत ग्रन्थों का अंग्रेजी अनुवाद कर के बताई। 1861 ई. में कनिंघम के नेतृत्व में पुरातात्विक अन्वेषण व उत्खनन प्रारम्भ हुआ।

प्राचीन काल से भारत में अत्यधिक विकसित संस्कृति थी यह उत्खननों से ज्ञात हुआ। भारत के प्राचीन वैभव के ज्ञान से देश में आत्म विश्वास जाग्रत हुआ व राष्ट्रवाद की प्रेरणा मिली। भारतीय ही नहीं यूरोपीय विद्वानों ने भी भारत के वैदिक ज्ञान को विश्व कल्याण के लिए महत्वपूर्ण बताया।

2. **ब्रिटिश शासन का प्रभाव**–अंग्रेजों द्वारा भारत का आर्थिक व सांस्कृतिक शोषण किये जाने के कारण उनकी नीतियों का विरोध हुआ। 1837 से 1857 ई. तक ब्रिटिश नीतियों के विरूद्ध अनेक विद्रोह हुए, इनमें नागरिक विद्रोह, आदिवासियों के विद्रोह, किसान विद्रोह सम्मिलित थे। भारतीयों को यह समझ में आ गया कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी सत्ता भारत के लिए हितकर नहीं हो सकती। लार्ड लिटन की अदूरदर्शी व प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों में और अधिक असंतोष पैदा किया। भारत का राष्ट्रीय आन्दोलान ब्रिटिश शासन के विरूद्ध प्रतिक्रिया का परिणाम था।

3. अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव–यद्यपि लार्ड मैकाले अंग्रेजी शिक्षा एवं भाषा के प्रचलन करके भारतीयों को मानसिक दृष्टि से गुलाम बनाना चाहता था, लेकिन अंग्रेजी भाषा भारतीयों के लिए विश्व सम्पर्क भाषा बन गई। भारतीय युवक उच्च शिक्षा में रूचि लेने लगे और इससे राष्ट्रीय जागृति को प्रोत्साहन मिला।

4. पाश्चात्य दार्शनिकों एवं विचारकों से सम्पर्क का प्रभाव– अंग्रेजी भाषा के माध्यम से भारतीय युवक, बर्क, बैंथम, मिल, रूसो, मिल्टन, स्पेन्सर आदि के सम्पर्क में आये। इनके क्रान्तिकारी एवं राष्ट्रीय विचारों से प्रभावित हुए, इससे राष्ट्रवाद को बल मिला।

5. भारतीय साहित्यकारों का योगदान–भारतीय कवियों एवं लेखकों ने राष्ट्रप्रेम से परिपूर्ण साहित्य की रचना की 'आनन्द मठ' एवं 'नील दर्पण' नाटकों के मंचन से राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन मिला। बंकिमचन्द्र चटर्जी का आनन्द मठ देशभक्ति का पर्याय बन गया। 'वन्दे मातरम्' गीत इन्हीं की देन है। तत्कालीन साहित्यकारों ने मातृभूमि के प्रति विशेष आस्था प्रकट की थी। बंकिमचन्द्र का 'वन्दे मातरम्' गीत भारत के राष्ट्रीय आन्दोलनकारियों की प्रेरणा का मुख्य स्रोत बन गया। अन्य साहित्यकारों में हेमचन्द्र बनर्जी, नवीनचन्द्र सेन, आर.सी. दत्त, रविन्द्रनाथ टेगोर, बद्रीनारायण चौधरी प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट आदि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय भावना के जागरण में विशेष योगदान दिया।

6. छापेखाने का प्रारम्भ एवं समाचार पत्रों का योगदानः– समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ संचार के सुगम साधन हैं। 1800 ई. में कोलकाता के समीप श्रीरामपुर में छापेखाने की शुरूआत हो गई और समाचार–पत्रों का प्रकाशन तेजी से हुआ। 1774 ई. में प्रथम समाचार–पत्र 'इण्डिया गजट 'व 1780 ई.में 'बंगाल गजट' प्रकाशित हुआ। राष्ट्रीय भावना के प्रसार की दृष्टि से राजा राममोहनराय ने 'संवाद कौमुदी' व 'मिरातुल' अखबार प्रकाशित करवाया। हिन्दी भाषा का प्रथम समाचार–पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का 1826 ई. में प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। समाचार–पत्रों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी साम्राज्यवादी एवं शोषण नीति का खुलकर विरोध किया। समाचार–पत्रों एवं साप्ताहिक पत्रों के माध्यम से भारतीय समाज सुधारकों एवं राजनीतिक विचारकों के विचार जनता के पास जाने लगे। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने 'सोम प्रकाश' एवं हरिश्चन्द्र मुखर्जी ने 'हिन्दू पैट्रियट' का प्रकाशन किया। 1868ई. में 'अमृत बाजार पत्रिका' का प्रकाशन हुआ। तिलक ने मराठी भाषा में 'केसरी' व अंग्रेजी में 'मराठा' प्रकाशित किया। इन समाचार–पत्रों ने भारत में बलिदान एवं राष्ट्रवाद का वातावरण तैयार किया।

7. अंग्रेजों द्वारा भारतीयों से भेदभावपूर्ण नीति अपनाना भारतीयों को सेना व प्रशासन में उच्च पदों से वंचित रखना, भारतीयों से भेदभाव, रखना, 1857 ई. की क्रांति के बाद भारतीयों का अपमान व अत्याचार, कानून के समक्ष अंग्रेजों व भारतीयों में असमानता

आदि अंग्रेजों द्वारा किये गये कई ऐसे कार्य थे जिससे भारतीयों में असंतोष उत्पन्न हुआ।

8. धर्म सुधार व समाज सुधार आंदोलन का प्रभाव–भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रारम्भ में धर्म व समाज में फैली हुई कुरीतियों के विरूद्ध शुरू हुये ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन की महत्वूपर्ण भूमिका रही। राजा राममोहनराय व स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक बुराइयों को दूर किया एवं लोगों में राष्ट्रीय प्रेम जागृत किया। ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहनराय को आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाता है। उन्होंने आधुनिक शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया उन्होंने प्रेस की आजादी एवं स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। ब्रह्म समाज के ही केशवचन्द्र सेन ने सामाजिक समानता एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने सम्पूर्ण भारत की यात्रा करके विभिन्न पन्थों को जोड़ने का प्रयास किया। आर्य समाज के संस्थापक ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग एवं स्वराज्य पर जोर दिया। उन्होंने ही सर्वप्रथम स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया। स्वामी विवेकानन्द ने 1893 ई. में शिकागों के धर्म सम्मेलन में वेदान्त के उपदेश देकर विश्व में भारत का मान बढ़ाया। उन्होंने राजनैतिक स्वतंत्रता और अतीत के गौरव के सम्मान पर बल दिया। भारत माता की सेवा को ही एकमात्र धर्म बताया। भारत में राष्ट्रवाद को गति देने में इन सुधार आन्दोलनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

9. भारत का आर्थिक शोषण–भारतीयों में अंग्रेजों द्वारा किये गये आर्थिक शोषण के विरूद्ध भारी असंतोष था। भारत के कुटीर उद्योगों को नष्ट कर दिया। यहां से सस्ते भाव से कच्चा माल लेते थे और अंग्रेज उसे तैयार करके ऊँचे दामों में बेच देते थे। विदेशी पूँजी का भारत में निवेश, विदेशी आयात के माध्यम से भारत का शोषण किया। इंग्लैण्ड में भारत की गृह सरकार का सारा खर्चा भारत द्वारा ही वहन किया जाता था। भारत से धन का अपहरण, कुटीर उद्योगों का विनाश, किसानों का शोषण आदि का भारतीयों ने विरोध किया।

राष्ट्रीय आन्दोलन एवं भारत की स्वतंत्रताः–

राष्ट्रवाद की भावना से प्रेरित होकर लम्बे समय तक भारतीयों ने भारत को स्वतंत्र कराने के लिये राष्ट्रीय आन्दोलन चलाया। क्रांतिकारियों के बलिदान, महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आन्दोलन एवं स्वतंत्रता सेनानियों के प्रयासों से भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ। भारत को स्वतंत्र कराने में क्रांतिकारी भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद, चापेकर बन्धु, अशफाक उल्लाह खान, रामप्रसाद, बिस्मिल, राजेन्द्र लाहड़ी, खुशीराम बोस, प्रफुल्लचन्द्र, वासुदेव बलवन्त फड़के, वीर सावरकर, सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय, विपिनचन्द्र पाल, बालगंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, अरविन्द घोष, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सन् 1857 का स्वतंत्रता संग्राम : राजस्थान के विशेष संदर्भ में

भारत में अंग्रेजों के विरूद्ध तीव्र असंतोष बढ़ता जा रहा था। अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति और आर्थिक शोषण ने इस सन्तोष को ओर अधिक तीव्र कर दिया। सन् 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम इसी तीव्र असंतोष का परिणाम था। ब्रिटिश विद्वानों ने इसे सैनिक विद्रोह या गदर कहा है, लेकिन यह उचित नहीं है। वीर सावरकर ने इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा है। अंग्रेजों को पहली बार भारतीयों के संगठित विरोध का सामना करना पड़ा।

स्वतंत्रता संग्राम के कारण

1. प्रशासनिक एवं राजनैतिक– अपनी साम्राज्यवादी महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए लार्ड वैलेजली ने देशी रियासतों यथा– झाँसी, नागपुर, सतारा, अवध को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया। भारतीय जमींदारों की भूमि छीन ली। मुगल सम्राट बहादुरशाह से अपमान –जनक व्यवहार करके मुसलमानों को नाराज कर दिया। उच्च सेवाओं में भारतीयों को नियुक्ति नहीं दी गई। अंग्रेजों की न्याय व्यवस्था से भी भारतीय संतुष्ट नहीं थे।

2. सामाजिक कारण–अंग्रेज भारतीयों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। भारतीय परम्पराओं और रीति–रिवाजों की भी उपेक्षा की। भारतीयों के साथ भेदभाव की नीति अपनायी। भारतीयों के लिए रेल में प्रथम श्रेणी यात्रा की अनुमति नहीं थी। काले–गोरे का भेद किया जाता था। पाश्चात्य सभ्यता भारतीयों पर लादने की चेष्टा की। सामाजिक दृष्टि से वे अपने आपको सर्वोच्च मानते थे। आगरा के एक मजिस्ट्रेट की टिप्पणी से अंग्रेजों की मानसिकता झलकती है जिसमें उसने कहा था–'प्रत्येक भारतीय को चाहे उसका पद कुछ भी है उसे विवश किया जाना चाहिये कि सड़क पर चलने वाले प्रत्येक अंग्रेज को सलाम करे। यदि भारतीय घोड़े या गाड़ी पर सवार हो तो उसे नीचे उतर कर तब तक खड़े रहना चाहिए जब तक कि अंग्रेज वहाँ से निकल न जाये।' अंग्रेजों ने सन् 1856 के पैतृक सम्पत्ति कानून के अनुसार उत्तराधिकार के नियम में यह परिवर्तन कर दिया गया कि यदि कोई हिन्दू ईसाई धर्म स्वीकार कर लेगा तो उसे पैतृक सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जायेगा। पूर्व में प्रावधान था कि यदि कोई धर्म परिवर्तन कर लेता है तो उसे पैतृक सम्पत्ति के अधिकार से वंचित किया जा सकता था। अंग्रेजों की इस कार्यवाही से भारतीयों में असंतोष जाग्रत हुआ। अंग्रेजों द्वारा भारत में किये गये सामाजिक सुधार और आधुनिकीकरण के नाम पर रेल, डाक–तार विभाग में किये गये काम को भी भारतीयों ने अपनी सभ्यता और संस्कृति पर आक्रमण माना।

3. धार्मिक कारण–

अंग्रेजों का एक छदम् उद्देश्य था, भारत में अपने धर्म का प्रचार करना। हाऊस ऑफ कॉमन्स में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अध्यक्ष मैगल्स द्वारा दिये गये व्याख्यान में स्पष्ट कहा गया था कि देवयोग से भारत का विस्तृत साम्राज्य अंग्रेजों को मिला ताकि अपने मजहब की पताका भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक फहरा सके। 1813 ई. के चार्टर एक्ट द्वारा अपने मजहब प्रचारकों को भारत में रहने एवं अपने मत का प्रचार करने की स्वीकृति मिल गई।

जो मतांतरण कर लेता था उसे अन्य सुविधाओं के साथ राजकीय सेवा का भी अवसर मिलता था। सेना में भी पादरियों की नियुक्ति होने लगी। अंग्रेजों के प्रति भारत में यह धार्मिक असंतोष भी 1857 ई. के आन्दोलन का कारण बना।

4. सैनिक कारण–

सन् 1857 के भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की शुरूआत सैनिक असंतोष के रूप में ही हुई थी। भारतीय सैनिकों के प्रति वेतन, भत्ते, पदोन्नति व व्यवहार में भेदभाव किया जाता था। भारतीय सैनिकों को 9 रूपया मासिक दिया जाता था, जबकि अंग्रेज सैनिकों को 60 या 70 रूपया दिया जाता था। थोड़ी सी गलती पर भी उन्हें बन्दूक के नट से मारा जाता था और ठोकर मारी जाती थी। भारतीय सैनिकों की संख्या अंग्रेजों से तीन गुनी थी। उनको यह अहसास था कि अंग्रेजों का राज्य हमारे बल पर ही चल रहा है। इससे भी उन्हें अंग्रेजों के विरूद्ध शस्त्र उठाने में प्रोत्साहन मिला। क्रीमिया युद्ध में अंग्रेजों की हार से भी भारतीय सैनिकों को प्रेरणा मिली। भारतीय सैनिकों के भत्ते को भी समाप्त कर दिया। द्वितीय बर्मा युद्ध के समय भारतीय सैनिकों को समुद्र पार भेजा गया तो उन्होंने इसका विरोध किया क्योंकि उस समय हिन्दू धर्म में समुद्री यात्रा को धर्म विरूद्ध माना जाता था। सन् 1857 से पूर्व भी कई सैनिक विद्रोह हो चुके थे।

5. आर्थिक कारण–

अंग्रेजों की भारत के प्रति आर्थिक शोषण की नीति से भारतीयों में तीव्र असंतोष था। ब्रिटेन का उद्देश्य भारतीय उपनिवेश से अधिक से अधिक पूंजी एकत्र करना था। उन्होंने भारत की आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नष्ट– भ्रष्ट कर दिया। अंग्रेज अमीर और भारतीय अधिक गरीब होते गये। अंग्रेजों ने अत्यधिक लगान लगा दिया। किसानों और जमींदारों

का उत्पीड़न किया। अकाल के समय भी किसानों और जमींदारों का शोषण किया। अकाल के समय भी किसानों की सहायता नहीं की गई। इससे भारतीयों में विरोध बढ़ता गया।

6. तात्कालिक कारण–

सैनिकों को पुरानी राइफलों के स्थान पर नई एनफील्ड राइफल दी गई जिसके कारतूस के ऊपरी भाग को मुँह से काटना पड़ता था। जनवरी, 1857 में यह बात फैल गई कि कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी लगी हुई है। अंग्रेजों के इस कार्य को भारतीय सैनिकों ने धर्म विरोधी माना। 29 मार्च, 1857 को बेरकपुर की छावनी में मंगल पाण्डे ने चर्बी वाले कारतूस मुंह से काटने से मना कर दिया तथा उसने अंग्रेज अधिकारी की हत्या भी कर दी। मंगल पाण्डे को 8 अप्रेल, 1857 को फाँसी दे दी गई। इससे सैनिक भड़क गये और अंग्रेजों के विरूद्ध क्रांति का बिगुल बजा दिया। मेरठ से क्रांति का प्रसार दिल्ली, कानपुर, बिहार, राजस्थान, दक्षिणी भारत आदि स्थानों तक हो गया।

7. स्वतन्त्रता संग्राम के नायक–

भारतीयों के इस संगठित विरोध ने अंग्रेजों की जड़ें हिलाकर रख दी। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, कानपुर से नानासाहब, तांत्या टोपे व अजीमुल्ला, बिहार से कुंअर सिंह, दक्षिण भारत में रंगाजी बापू, गुप्ते तथा मेवाड़ के सामन्तों ने क्रांतिकारियों का साथ दिया। आहुवा के ठाकुर खुशालसिंह ने सैनिक सहायता प्रदान की। सलूम्बर के रावत केसरीसिंह ने आऊवा के ठाकुर खुशालसिंह को अपने यहां शरण भी दी। कोठारिया के ठाकुर जोधसिंह ने ब्रिटिश अधिकारी की सम्पत्ति लूटली तथा नीमजी चारण को संरक्षण भी दिया।

राजस्थान में 1857 ई. का स्वतंत्रता संग्राम

आऊवा के ठाकुर खुशालसिंह अंग्रेजों के घोर विरोधी थे, उन्होंने अपने अंग्रेजो विरोधी संघर्ष में जोधुपर राज्य एवं अंग्रेजी सेना को बुरी तरह से परास्त किया। आऊवा के ठाकुर खुशाल सिंह ने बिटिश रेजीडेन्ट मैकमेसन का सिर धड़ से अलग कर दिया और उसे आऊवा के किले पर लटका दिया। आऊवा के ठाकुर को मेवाड़ के सामन्तों का भी जन समर्थन था, लेकिन दूसरे ही वर्ष जोधपुर व अंग्रेजों की संयुक्त सेना ने ठाकुर खुशालसिंह पर आक्रमण कर दिया। किलेदार को रिश्वत देकर किले के दरवाजे खुलवा दिये एवं किले में प्रवेश कर गये।

28 मई,1857 को नसीराबाद के सैनिकों ने तोपखाने पर अधिकार कर लिया। खजाना लूट लिया। एक अंग्रेज अधिकारी के टुकड़े कर दिये। अंग्रेज अधिकारी प्राण बचाकर वहां से भाग निकले। यहां से सैनिक दिल्ली कूच कर गये। नसीराबाद क्रान्ति के समाचार नीमच पहुँचे। नीमच में सैनिको ने शस्त्रगार लूट लिया। अंग्रेज अधिकारी उदयपुर की ओर भाग गये। महाराणा ने उन्हें महलों में शरण दी। कोटा में भी अंग्रेजों के विरूद्ध आम जन और राजकीय सेना द्वारा संघर्ष किया गया। कोटा के महाराव को भी अंग्रेजों के प्रति सहयोग की नीति के कारण क्रान्तिकारियों का कोपभाजन बनना पड़ा था। अंग्रेज विरोधी भावना जाग्रत करने में जयदयाल, मेहराब खां, रतनलाल व जियालाल की प्रमुख भूमिका रही। कोटा के सम्पूर्ण प्रशासन पर क्रान्तिकारियों का अधिकार हो गया। कोटा में इस दौरान लगभग पांच माह तक जन शासन रहा।

कोटा में पॉलिटिकल एजेन्ट मेजर बर्टन था। कोटा के क्रान्तिकारियों ने मेजर बर्टन व उसके दो पुत्रों को मौत के घाट उतार दिया। यहां क्रान्तिकारियों का जनता ने साथ दिया। यहां के शासक को क्रान्तिकारियों ने महल में कैद कर लिया। 6 माह तक कोटा में क्रान्तिकारियों का कब्जा रहा। टोंक और शाहपुरा में अग्रेंजी सैनिकों के लिए द्वार बन्द कर दिए लेकिन सर्वमान्य नेता के अभाव में अंग्रेजो ने अपने सैनिक बल के आधार पर इस क्रान्ति का दमन कर दिया।

तांत्या टोपे

तांत्या टोपे ने राजस्थान के झालावाड़ में प्रवेश किया एवं झालावाड़ पर अधिकार कर लिया। यहां के शस्त्र भण्डार पर क्रांतिकारियों ने अधिकार कर लिया। राजस्थान में तात्या टोपे के आगमन से क्रांतिकारियों में नया जोश आ गया।

सलूम्बर के रावते केसरीसिंह तथा कोठारिया के सामन्त जोधसिंह ने तांत्या टोपे को पूरा सहयोग दिया। नरवर के शासक मानसिंह ने तांत्या टोपे को अंग्रेजों के हाथों पकड़वा दिया और 1859 ई. में उसे फांसी दे दी गई, लेकिन फाँसी देना सत्य नहीं है, क्रांति को कमजोर होता हुआ देखकर वह अज्ञातवास में चला गया। इसी के साथ राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम भी समाप्त हो गया।

स्वतंत्रता संग्राम की असफलता के कारण :–

भारतीयों के इस संगठित और सामूहिक विरोध से अंग्रेज घबरा गये। क्रान्तिकारियों ने प्रारम्भ में अंग्रेजों को कई स्थानों पर पराजित किया लेकिन अपने विशाल सैनिक शक्ति तथा यहां की रियासतों के शासकों की सहानुभूति के बल पर भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का दमन कर दिया। अन्य भी कई कारण थे जो इस संग्राम की सफलता में बाधक बनें, यथा–

1. निश्चित योजना के अभाव के कारण क्रान्तिकारी आपस में सम्पर्क में नहीं आ सके।
2. क्रान्तिकारियों के पास अंग्रेजों की तुलना में परम्परागत सैनिक शक्ति व सीमित साधन थे।
3. देशी रियासतों का क्रान्तिकारियों को सहयोग नहीं मिला।
4. क्रान्ति की शुरुआत निर्धारित योजनानुसार 31 मई,1857 को होनी थी लेकिन कुछ घटनाक्रम ऐसा हुआ कि क्रान्ति 10 मई से ही शुरु हो गई।
5. लार्ड कैनिंग की कूटनीति से देशी रियासतों को अपने पक्ष में कर लिया और क्रान्तिकारियों पर नियन्त्रण प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली।

1857 के स्वतंत्रा संग्राम का महत्व एवं परिणाम :–

सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में यद्यपि सफलता नहीं मिली लेकिन अंग्रेजों को प्रशासनिक नीति में परिवर्तन और सेना के पुनर्गठन के लिए विवश होना पड़ा, यथा–

1. ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन को समाप्त करके भारत का प्रशासन सीधे ब्रिटिश सरकार के अधीन हो गया।
2. सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से भविष्य में भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरणा मिली।
3. देशी रियासतों के साथ अंग्रेजों की नीति में परिर्वतन आया। महारानी ने अपनी घोषणा में देशी राजाओं को उनके अधिकार,सम्मान व गौरव दिलाने की बात कही लेकिन उनको दत्तक पुत्र गोद लेने की अनुमति नहीं दी गई।
4. अंग्रेज समझ गये कि हिन्दू–मुस्लिम एक रहे तो अंग्रेज अधिक समय तक शासन नहीं कर पाऐंगे। अतः उन्होंने फूट डालो व राज करो की नीति अपनायी व हिन्दू व मुस्लिम वैमनस्य को जन्म दिया।
5. इस क्रान्ति के बाद अंग्रेजों ने सेना का पुनर्गठन किया। सेना में ब्रिटिश सैनिकों की संख्या बढ़ा दी और तोपखाना भारतीयों के पास नहीं रहा।

यद्यपि अंग्रेंजों ने अपनी सैनिक शक्ति और कूटनीति के बल पर भारतीयों के इस संघर्ष को दबा दिया लेकिन इस आन्दोलन ने यह साबित कर दिया कि यदि भारतीय संगठित होकर नियोजित प्रयास करें तो अंग्रेजों को भारत से बाहर किया जा सकता है। अंग्रेजों को भी यह एहसास हो गया कि भारत पर शासन करना है तो फूट डालो व राज करो की नीति अपनानी होगी। इस प्रकार भारत में राष्ट्रीयता का विकास हुआ और अन्ततः इसी के फलस्वरूप भारत स्वतंत्र भी हुआ।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. राष्ट्र या देश के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव ही राष्ट्रवाद है।
2. भारत में राष्ट्रवाद की धारणा का प्रबन्धन वैदिककाल से ही रहा है।

3. राष्ट्र की जनता में 'मै' के स्थान पर 'हम' की भावना राष्ट्रवाद ही उत्पन्न करता है।

4. 19 वीं शताब्दीं का भारतीय राष्ट्रवाद अंग्रेजों द्वारा किये जाने वाले भारत के आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दमन चक्र के विरुद्ध प्रतिक्रिया थी।

5. भारत में राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न करने में समाचार–पत्रों एवं भारतीय साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

6. भारत को स्वतंत्र करने में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं क्रान्तिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

7. वीर सावरकर ने 1857 ई. की क्रान्ति को 'भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' कहा हैं।

8. सन् 1857 के स्वतंत्रता संघर्ष का तात्कालिक कारण एन्फील्ड राइफल में सुअर एवं गाय की चर्बी लगे कारतूसों का प्रयोग करना था।

9. सन् 1857 के स्वतंत्रता संघर्ष के प्रमुख नायकों में रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, तात्यां टोपे, कुंवरसिंह, बहादुरशाह आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

10. सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का प्रसार दक्षिण भारत में भी महाराष्ट्र, हैदराबाद, मद्रास, आदि राज्यों तक व्याप्त था।

11. राजस्थान में 1857 ई. के स्वतंत्रता संघर्ष में नसीराबाद, नीमच ,देवली, कोटा ,टोंक ,एरिनपुरा एवं कोटा तक फैल गया था।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारत में छापाखाने की शुरुआत हुई थी –
   (अ) 1800 ई (ब) 1700 ई
   (स) 1830 ई (द) 1805 ई.
2. 'भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' पुस्तक के लेखक कौन थे ?
   (अ) आर.सी.मजमूदार (ब) अशोक मेहता
   (स) वीर सावरकर (द) दादाभाई नोरोजी
3. मेजर बर्टन पॉलिटिकल एजेन्ट था –
   (अ) नीमच (ब) कोटा
   (स) एरिनपुरा (द) अजमेर
4. ठाकुर खुशालसिंह किस स्थान के शासक थे –
   (अ) एरिनपुरा (ब) सलूम्बर
   (स) आऊवा (द) नसीराबाद

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. बंगाल गजट का प्रकाशन कब प्रारम्भ हुआ ?
2. 'वन्दे मातरम्' गीत की रचना किसने की ?
3. 1857 का स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किसने किया?
4. निर्धारित योजनानुसार क्रान्ति की शुरुआत कितनी तारीख को होनी थी ?

5 मेजर बर्टन की हत्या कहाँ की गई ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'राष्ट्रवाद' शब्द की परिभाषा कीजिए ।
2. अंग्रेजों ने भारत का आर्थिक शोषण किस प्रकार किया?
3. राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख क्रान्तिकारियों के नाम बताइये।
4. राजस्थान में 1857 ई. की क्रांति के प्रसार का उल्लेख कीजिए।
5. 1857 ई. के संग्राम में किन–किन महानायकों का योगदान रहा ?

निबन्धात्मक प्रश्न–

1. भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारणों का वर्णन कीजिए।
2. 1857 ई.के स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख कारणों का वर्णन कीजिए।
3. 1857 ई. के संघर्ष में क्रान्तिकारियों की असफलता के कारण बताइये।
4. 1857 ई.के स्वतंत्रता संग्राम के महत्व का वर्णन कीजिए।
5. 1857 ई. का स्वतंत्रता संग्राम का राजस्थान के प्रसार विषय पर एक लेख लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1.(अ) 2.(स) 3.(ब) 4.(स)